आभार

सराय कार्यक्रम की मेज़बानी तथा समर्थन के लिए हम सीएसडीएस के आभारी हैं. संस्था के लायब्रेरियन सुजीत देब, अविनाश झा एवं रमेश जी के हम शुक्रगुज़ार हैं जिन्होंने हिंदी की किताबों के लिए अतिरिक्त उत्साह दिखाया. डिस्पैच सेक्शन में घनश्याम दत्त गौतम और गेट पर बिहारी लाल शर्माजी ने काफ़ी मदद की. सराय का हर काम काफ़ी हद तक सामूहिक होता है पर पूरी सराय टीम का नाम लेना संभव नहीं - हम उन सबके शुक्रगुज़ार हैं.

अभय कुमार दुबे, आदित्य निगम, शाहिद अमीन, अरविंद कृष्ण मेहरोत्रा, अविनाश कुमार, राणा बहल, राजेन्द्र यादव, उदय प्रकाश, सुधीश पचौरी, सविता सिंह, अनामिका, मोहन राणा जिन्होंने लगातार हमारा मार्गदर्शन किया है. ख़ालिद अलवी शेर-ओ-शायरी के चलते-फिरते ख़ज़ाने हैं, दीवान में जहाँ-तहाँ बिखरे कुछ आश'आर उन्हीं की मेहरबानी है. प्रभात रंजन, विभास चंद्र वर्मा और प्रभात कुमार झा ने हरसंभव तरीक़े से हमारी मदद की.

हम उन सभी लेखकों और छायाकर्मियों के आभारी हैं जिन्होंने इस *दीवान* में अपनी रचनाएँ दी हैं. उनके भी जिनकी रचनाओं का छपना *दीवान* के बदलते स्वरूप के साथ मुल्तवी हो गया है. इस दीवान में अनेक लेख/चित्र/छायांकन लिये गए हैं. हमने हर संभव कोशिश की है कि इनके रचनाकार/छविकारों से इजाज़त ली जाए. हम आशा करते हैं कि वे रचनाकार/छविकारों जिनसे हम संपर्क नहीं साध पाए, उनको अपनी कृति *दीवान* में छपने से कोई आपत्ति नहीं होगी.

हम वाणी प्रकाशन और अरुण माहेश्वरी के बेहद शुक्रगुज़ार हैं जिन्होंने इतने कम समय में किताब छाप दी.

लेख

1. 'कोलकाताः अ पोर्ट्रेट इन ब्लैक ऐण्ड ब्लड': उर्दू *शऊर,* 1978 से साभार.
2. 'यह जो पटना था': लेखक की अंग्रेज़ी पुस्तक *बॉम्बे लंडन न्यूयॉर्कः अ लिटररी जर्नी,* पेग्विंन बुक्स, नई दिल्ली, 2002 के तीसरे अध्याय 'राइटर इन द हिंटरलैंड' का अनुवाद है.
3. 'कौन जाएगा कहीं काशी की गाली छोड़ के': *हंस,* अगस्त 2002 से साभार.
4. 'नाइजीरिया – सिनेमा हॉल की ज़मीन पर': 'द मटीरिऐलिटी ऑफ़ सिनेमा थियेटर्स इन नॉर्दर्न नाइजीरिया' का अनुवाद है. यह लेख फ़ाय डी. गिंसबर्ग, लीला अबू-लुगॉड और ब्रॉयन लार्किन (सं) पुस्तक *मीडिया वर्ल्ड्स*, युनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, कैलिफ़ोर्निया, 2002 में छपा था.
5. 'फ़िल्मी पोस्टर का सफ़र': *फ़िल्म इंटरनैशनल नं. 4 (2003:4)* में 'द बॉम्बे फ़िल्म पोस्टरः द जर्नी फ़्रॉम द स्ट्रीट टू द म्यूज़ियम' नाम से छपी थी. इसका मूल अंग्रेज़ी संस्करण http://www.filmint.nu/pdf/helanr/F14web.pdf पर उपलब्ध है.
6. 'अकथ-कथन अर्थात ज़ेहन के गुप्त रोग': सराय में आयोजित *सिटी मीडिया ऐण्ड लैंग्वेज* नामक कार्यशाला (अप्रैल, 2004) में पढ़े गए पर्चे 'सीक्रेट डिज़िज़ेज़ः द डिप्लीटिंग स्टॉक ऑफ़ दि अनस्पीकेबल इन डेल्ही, ऑर, स्पीकिंग टू द सेक्स लाइफ़ ऑफ़ अ सैड सिटी' का अनुवाद है.

7. 'इलाहाबाद का कॉफ़ी हाउस': नीलाभ (सं.) *हिन्दी साहित्य का मौखिक इतिहास, दूसरा खंड; गलियाँ, रास्ते और पड़ाव*, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, 2004.

8. 'यहाँ एक कॉफ़ी हाउस रहता था': *नया ज्ञानोदय*, अंक 19, सितम्बर 2004.

9. 'मॉडल टाउन का मेलाः दौरे बेकली': का एक वृहत्तर संस्करण स्व. देवी शंकर अवस्थी की स्मृति में *इंद्रप्रस्थ भारती,* वर्ष 5, अंक 1, जनवरी-मार्च 1992, में प्रकाशित हुआ था.

10. 'बेजिंग में महामारीः सार्स के आईने में चीनी राष्ट्रवाद और आधुनिकता का अक्स': *सराय रीडर 04: क्राइसिस मीडिया,* 2004 में छपे लेख 'रिमेंम्बरिंग सार्स इन बेजिंगः द नैशनलिस्ट अप्रोप्रिएशन ऑफ़ ऐन एपिडेमिक' का संशोधित संस्करण है.

11. 'स्वच्छता के दावेदारः समकालीन दिल्ली में पर्यावरण और इंसाफ़': *सराय रीडर 02: द सिटीज़ ऑफ़ एवरीडे लाइफ़,* 2002 में छपे लेख 'क्लेम्स ऑन क्लेनलिनेस' का अनुवाद है.

12. 'मंकीमैनः दिल्ली का पहला सायबॉर्ग?': रीडर लिस्ट पर परिघटना के समय मई 2001 में पोस्ट किए गए संदेश का अनुवाद है, मूल के लिए देखें http://mail.sarai.net/pipermail/reader-list/2001-May/000081.html.

13. 'आयो कहाँ से मकीमैन': *सराय रीडर 02: द सिटीज़ ऑफ़ एवरीडे लाइफ़,* 2002 में छपे लेख 'द थियेटर ऑफ़ दि अर्बनः द स्ट्रेंज केस ऑफ़ द मंकीमैन' का अनुवाद है.

14. 'मंकीमैन के नाम खुला ख़त': नामक आलेख सराय के 'दिस सिटी दिस इयर' (2002) आयोजन में पढ़ा गया था.

15. 'तकनीक के खंडहर': अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका *कनेक्ट,* नं. 2, 2001 में छपे लेख 'टेक्नॉलॉजिकल रूइंसः ऐन इंडियन स्टोरी' का अनुवाद है.

16. 'सायबरमोहल्ला डायरियों के कुछ अंशः 'सीवर लाइन', 'मैं अशोकी', 'दिल्ली गेट' मॉनिका नरुला + श्वेता शारदा (सं.), *बुक बॉक्स*, सराय + अंकुर, 2003 में और 'ब्यूटी पार्लर' सायबरमोहल्ला ब्रॉडशीटः *बड़े-बड़े शहरों में कुछ नम बातें*, यशोदा सिंह + लखमी चंद कोहली (सं.) 1 जनवरी से 31 मार्च 2005 में छपे थे.

17. 'ग़ुलाम माज़ी पर कुछ आज़ाद ख़याल': *सेमिनार 445*, सितम्बर 1996 में छपे लेख 'एम्पैथायज़िंग विद अ कॉलोनियल पास्ट' का अनुवाद है.

18. 'राष्ट्रवाद का नारी-परिवेशः दिल्ली 1930-47': *जेंडर, प्लेस ऐण्ड कल्चर,* खण्ड 10, नं. 1, 2003, में छपे लेख 'जेंडर्ड पॉलिटिक्स ऐण्ड नैशनलिस्ट होम्सः विमेन ऐण्ड दि ऐंटी-कॉलोनियल स्ट्रगल इन डेल्ही, 1930-47 का अनुवाद है.

19. 'कोलकाता 47: साम्राज्य का अंत': *सराय रीडर 02: द सिटीज़ ऑफ़ एवरीडे लाइफ़,* 2002 में छपे लेख 'द डेथ ऑफ़ एन एम्पायर' का अनुवाद है.

20. 'कैफ़े प्राग' नामक कविता मॉन्ट्रियल शहर से जुड़ी है और *अपने जैसा जीवन*, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001 में छपी थी.

चित्र

1. मॉनिका नरूला — पृ. V, VIII, 58, 59, 264, 280, 285.
2. अमिताभ कुमार — यह जो पटना था — चित्र लेखक से साभार.
3. ब्रायन लार्किन — नाइजीरिया—सिनेमा हॉल की ज़मीन पर — चित्र लेखक से साभार.
4. राकेश कुमार सिंह — महानगर में छठ लेख में सभी चित्र.
5. गुंटुपल्ली करुणाकर — ऑटो के पीछे क्या है लेख में सभी चित्र.
6. सौम्या वर्मा + सुमित रॉय — सामाजिकता का वास्तुशिल्पः दिल्ली का ऐतिहासिक कॉफ़ी हाउस में सभी चित्र लेखकद्वय से साभार.
7. रवीन्द्र कुमार — सराय/की — सभी चित्र लेखक से साभार.
8. सैयद ख़ालिद जमाल — हैमबर्गरियों का बेमुरव्वत श्रमशास्त्र — चित्र लेखक से साभार.
9. संजय शर्मा — बेजिंग में महामारी — सभी चित्र लेखक से साभार.
10. आनंद विवेक तनेजा — पुरातत्व का मिथक — : पृ. 307, उपिन्दर सिंह, *एन्शियंट डेल्ही*, ऑक्सफ़र्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1999, पृ. 35. अन्य चित्र लेखक से साभार.
12. सदन झा — सड़क की आँखें, शहर की कहानी साभार-चित्र : (पृ. 321): जिम मेसेलॉस एवं नारायणी गुप्ता (सं.) बि*एटो'ज़ डेल्ही* 1857, 1957, दिल्ली, रवि दयाल पब्लिशर्स, 2000, पृ. 25; अन्य चित्र लेखक द्वारा.

रेखांकन

1. पृ. 333, समीर विश्वास.
2. पृ. 345, गेनॉर बार्टन, लॉरेन मेलॉन (सं.) *ओल्ड डेल्हीः 10 ईज़ी वॉक्स*, रूपा ऐण्ड कंपनी, दिल्ली, 1988, पृ. 36.